UP Board Class 6 Geography Notes Chapter 10 भारत : मृदा, वनस्पति एवं वन्य-जीव

मृदा

मिट्टी को ही मृदा कहा जाता हैं। मृदा किसान की अमूल्य सम्पदा है। हमारे देश के आर्थिक विकास का प्रमुख आधार मिट्टी या मृदा है। धरातल के अधिकतर भाग पर मृदा पाई जाती है। यह मूल चट्टानों और जैव पदार्थों का सम्मिश्रण है, जिसमे उपयुक्त जलवायु होने पर नाना प्रकार की वनस्पतियाँ उगती है। मानव जीवन मे मृदा का महत्व बहुत अधिक है, विशेषकर किसानों के लिए। समस्त मानव जीवन मिट्टी पर निर्भर करता है। समस्त प्राणियों का भोजन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मिट्टी से प्राप्त होता हैं। हमारे वस्त्रों के निर्माण मे प्रयुक्त कपास रेशम, जूट व ऊन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमे मिट्टी से ही मिलते है।

मृदा के प्रकार

1. जलोढ़ मृदा
2. काली या रेगड़ मृदा
3. लाल मृदा
4. लैटेराइट मृदा
5. मरूस्थलीय मृदा
6. पर्वतीय मृदा

1. जलोढ़ मिट्टी

जलोढ़ को काँप, दोमट, कछारी या चीका मिट्टी भी कहा जाता है। इस मिट्टी का निर्माण नदियों द्वारा बहाकर लाये गये अवसाद के जमाव द्वारा होता है। यह मिट्टी हल्के भूरे रंग की होती है। खुदाई करने पर यह मिट्टी 490 मीटर की गहराई तक पाई गई है। इस मिट्टी मे नेत्रजन, फास्फोरस और वनस्पति अंशों की कमी होती है, परन्तु पोटाश और चूना पर्याप्त मात्रा मे पाया जाता है। यह मिट्टी भारत के काफी बड़े क्षेत्र मे पाई जाती है। यह मिट्टी भारत के 40% भाग पर पाई जाती है। भारत मे यह मिट्टी हिमालय से निकलने वाली तीन बड़ी नदियों-सतलज, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों-द्वारा बहाकर लाई गई कांप मिट्टी से निर्मित हुई है। मिट्टी के इन बारीक कणों को जलोढ़क आपूर्ति तथा औद्योगिक कृषि उपजें, इसी मिट्टी की देन है।

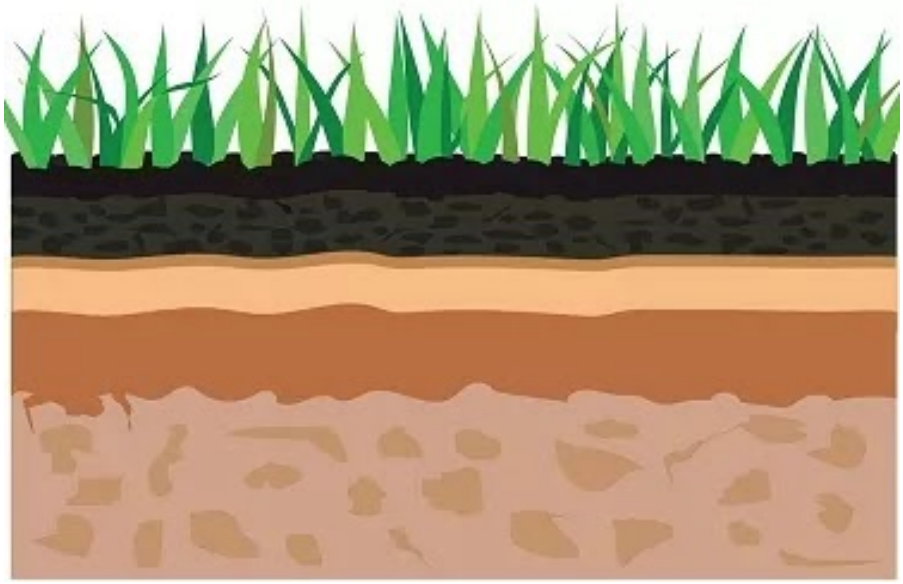

2. काली या रेगड़ मिट्टी

इस मिट्टी को रेगड़ या कपास वाली काली मिट्टी भी कहते है। इसका रंग गहरा काला और कणों की बनावट बारीक व घनी होती है। इस मिट्टी की रचना अत्यंत बारीक मृतिका (चीका) के पदार्थों से हुई है। इसलिए इस मिट्टी मे अधिक समय तक नमी धारण करने की क्षमता पाई जाती है।
भारत मे यह मिट्टी गुजरात से अमरकंटक तक और बेलगांव से गुना तक पाई जाती हैं। यह मिट्टी महाराष्ट्र के विदर्भ, खानदेश एवं मराठवाड़ा, मध्यप्रदेश मे, उड़ीसा के दक्षिण भाग, कर्नाटक के उत्तरी जिलों, आन्ध्रप्रदेश के दक्षिणी और तटवर्ती भाग, तामिलनाडु के भाग तथा राजस्थान के कुछ जिलों तथा उत्तरप्रदेश के बुन्देलखण्ड संभाग मे मिलती है। यह मिट्टी कपास, दाले, आदि के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।

3. लाल मिट्टी

यह मिट्टी शुष्क और तर जलवायु मे प्राचीन रवेदार और परिवर्तित चट्टानों के टूट-फूट से बनती है। यह मिट्टी लाल, पीली, भूरी, आदि विभिन्न रंगों की होती है। प्राय: इसमे लौह-अयस्क होने के कारण इसका रंग लाल होता है। ताप्ती नदी घाटी मे पहाड़ियों के ढ़ालो पर लगातार अधिक गर्मी पड़ने से चट्टानों के टूटने पर उसमे मिला हुआ लोहा मिट्टी मे फैल जाता है जिससे इसका रंग लाल हो गया है। इस मिट्टी मे अनेक प्रकार की चट्टानों से बनी होने के कारण गहराई और उर्वरा शक्ति मे भिन्नता पाई जाती है। यह मिट्टी अत्यंत रन्ध्रयुक्त है। यह अत्यंत बारीक तथा गहरी होने पर ही उपजाऊ होती है।

मेघालय, नागालैण्ड, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु तथा महाराष्ट्र मे मिलती है। इस मिट्टी मे बाजरा की फसल अच्छी पैदा होती है, किन्तु गहरे लाल रंग की मिट्टी कपास, गेहूं, दालें, और मोटे अनाज के लिए उपयुक्त है।

https://www.evidyarthi.in/

4. लैटेराइट मिट्टी

इस मिट्टी का निर्माण ऐसे भागों मे हुआ है जहाँ शुष्क व तर मौसम बारी-बारी से होता है। यह मिट्टी लैटेराइट चचट्टानों की टूट फूट से बनती है। यह मिट्टी चौरस उच्च भूमियों पर मिलती है। इस मे लोहा ऑक्साइड और पोटाश की मात्रा अधिक होती है। लैटेराइट मिट्टी तीन प्रकार की होती है–
(अ) गहरी लाल लैटेराइट मिट्टी
(ब) सफेद लैटेराइट मिट्टी
(स) गहरी जल वाली लैटेराइट मिट्टी
यह तमिलनाडु के पहाड़ी भागों और निचले क्षेत्रों, कर्नाटक के कुर्ग जिले, केरल राज्य के चौड़े समुद्री तट, महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले, पश्चिम बंगाल के बेसाल्ट और ग्रेनाइट पहाड़ियों के बीच तथा उड़ीसा के पठार के ऊपरी भागों और घाटियों मे मिलती है। यह मिट्टी चावल, कपास, गेहूँ, दाल, मोटे अनाज, सिनकोना, चाय, कहवा आदि फसलों के लिए उपयोगी है।

5. मरूस्थलीय मिट्टी

यह बालू प्रधान मिट्टी है जिसमे बालू के कण मोटे कण होते है। यह मिट्टी दक्षिण-पश्चिम मानसून द्वारा कच्छ के रन की ओर से उड़कर भारत के पश्चिमी शुष्क प्रदेश मे जमा हुई है। इसमे खनिज नमक अधिक मात्रा मे पाया जाता है। मरूस्थलीय मिट्टी मे नमी कम रहती है

बाजरा, सब्जियां आदि पैदा की जाती है। सिंचाई की सुविधा उपलब्ध न होने पर यह बंजर पड़ी रहती है।
यह मिट्टी शुष्क प्रदेशों विशेषकर पश्चिमी राजस्थान, गुजरात, दक्षिण पंजाब, दक्षिणी हरियाणा और पश्चिमी उत्तरप्रदेश मे मिलती है।

6. पर्वतीय मिट्टी

यह मिट्टी हिमालयी पर्वत श्रेणियों पर पायी जाती है। अधिकांशतः यह मिट्टी पतली, दलदली और छिद्रमयी होती है। नदियों की घाटियों और पहाड़ी ढ़ालों पर यह अधिक गहरी होती है। हिमालय के दक्षिणी ढ़ालों के अधिक खड़ा होने के कारण यहाँ इसका जमाव अधिक नही होता। पहाड़ी ढ़ालों के तलहटी मे टरशियरीकालीन मिट्टी पाई जाती है जो हल्की बलुई, छिछली, छिद्रमय और कम वनस्पति अंश वाली है। पश्चिमी हिमालय के ढ़ालों पर बलुई मिट्टी मिलती है, मध्य हिमालय के क्षेत्र मे अधिक वनस्पति अंशों वाली उपजाऊ मिट्टी मिलती है। अच्छी वर्षा होने पर इस मिट्टी मे दून एवं कांगड़ा घाटी मे, चाय की अच्छी पैदावार होती है।

भारत की प्राकृतिक वनस्पति

1. ऊष्णकटिबंधीय वर्षा वन
2. उष्णकटिबंधीय पतझर वन
3. कटीले वन तथा झाड़ियां
4. पर्वतीय वन
5. ज्वारीय वन या दलदली वन

1. ऊष्णकटिबंधीय वर्षा वन

https://www.evidyarthi.in/

1) इनको सदाबहार वन भी कहा जाता है। ये वनों की विशेषता यह है कि ये वन सालभर अपनी पत्तियां नहीं गिरते हैं।
2) भारत में वर्षा वन उन क्षेत्रों में पाये जाते हैं जहां वर्षा की मात्रा 250 cm तक होती है।
3) इन वनों के प्रमुख क्षेत्र हैं-
(i) पश्चिमी घाट में महाराष्ट्र से केरल तक।
(ii) पूर्वोत्तर भारत का शिलांग पठार।
(iii) पश्चिम बंगाल तथा ओड़िशा का तटील भाग।
(iv) तमिलनाडु का कोरामण्डल तट।
(v) अंडमान और निकोबार।
(vi) हिमालय का तराई क्षेत्र।

2. उष्णकटिबंधीय पतझर वन

(i) इन्हें पतझड़ या पर्णपाती वन भी कहा जाता है।
(ii) ये वन वहां पाये जाते है जहां वार्षिक वर्षा 100cm से 250cm तक होती है।
(iii) देश के सर्वाधिक क्षेत्रफल में यही मानसूनी वन पाए जाते हैं।
(iv) हिमालय के तराई क्षेत्र अर्थात मध्य प्रदेश से लेकर झारखंड तक उत्तर प्रदेश से तमिलनाडु तक (बीच के कटीले वन वाले भाग को छोड़कर) जहां वर्षा मानसूनी होती है ये वन पाये जाते हैं।
(v) मानसूनी वर्षा होने के कारण यहां पर साल भर वर्षा नहीं प्राप्त होती इस कारण यहां पाये जाने वाले वृक्ष सर्दियां बीत जाने के बाद या गर्मी आने से पहले पानी को बचाने के लिए अपनी पत्तियां गिरा देते है।
(vi) विशेषताएँ- मुलायम एवं मजबूत लकड़ी।
(vii) प्रमुख वृक्ष शीशम, साल, सागौन, साखू, आम, आंवला, चंदन।
(viii) इन वृक्षों का इमारती प्रयोग सर्वाधिक होता है। अतः आर्थिक उपयोगिता सबसे अच्छी है।
(ix) चंदन मुख्य रूप से कर्नाटक तथा नीलगिरी पहाड़ी क्षेत्र में पाया जाता है।

3. कटीले वन तथा झाड़ियां

1) ये वन कम वर्षा वाले क्षेत्रों में जहां वार्षिक वर्षा 70cm से कम होती है पाये जाते हैं।
2) प्रमुख रूप से दो क्षेत्र में पाये जाते है-
(i) पश्चिमी भारत में- राजस्थान, पंजाब, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश
(ii) वृष्टि छाया प्रदेश- मध्य प्रदेश के इंदौर से आंध्र प्रदेश के कर्नूल जिले तक एक अर्ध चंद्राकार पेटी में पाये जाते है।

1) पत्तों की जगह काटों ने ले ली है, जिसके दो प्रमुख कारण हैं।
(i) वाष्पीकरण कम करने पानी की बचत करने में सहायक।
(ii) जानवरों से सुरक्षा।

4. पर्वतीय वन

https://www.evidyarthi.in/

(i) पर्वतों पर पाये जाने वाले वन वर्षा का अनुसरण न करके ढ़ाल का अनुसरण करते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि ऊंचाई बढ़ने के साथ-साथ तापमान में तेज गिरावट आती है।
(ii) ऊंचाई के साथ तापमान में तेज गिरावट के कारण सीमित क्षेत्र में ही जलवायु में परिवर्तन दिखाई पड़ता है।
(iii) ऊंचाई जलवायु में संशोधन ला सकती है। इसी कारण पर्वत जलवायु में संशोधन कर देते है।

5. ज्वारीय वन या दलदली वन

(i) भारत में तटीय क्षेत्रों में जहां नदियों ने अपना डेल्टा बनाया है वहां ये वृक्ष पाये जाते है।
(ii) क्षेत्र- गंगा नदी का डेल्टा, महानदी का डेल्टा, ब्रह्मपुत्र नदी का डेल्टा, गोदावरी का डेल्टा, कृष्णा का डेल्टा, कावेरी का डेल्टा तथा गुजरात में कुछ भाग में पाये जाते हैं।
(iii) क्योकिं गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा का अधिकांश भाग बांग्लादेश के अधीन आता है अतः भारत में मैग्रोंव वनों की सबसे अधिक मात्रा गुजरात में पायी जाती है। उसके बाद आंध्र प्रदेश में गोदावरी तथा कृष्णा नदी के डेल्टा में ।
(iv) अधिकतर पूर्वी तट पर पाये जाते है। कुछ मैंग्रोव वन गुजरात में भी पाये जाते है परन्तु यहां ये नदी डेल्टा पर नहीं बल्कि ज्वारीय क्षेत्र में पाये जाते है अतः यहां इन्हें ज्वारीय वन कहा जाता है।

वृक्ष की उपयोगिता

1) वृक्षों से हमें कागज, दयासलाई साबुन आदि प्राप्त होते हैं।
2) वृक्ष मिट्टि को नम रखने मे सहायक होते हैं।
3) वर्षा करने है सहायक होते हैं।
4) पेड़ पौधे की जड़े मिट्टि को बंधे रखती हैं।
5) बार जैसे आपदा को रोकता हैं।

प्रवासी पक्षी

ऐसे पक्षी जो उड़कर सुदूर क्षेत्रों तक लम्बी यात्रा करते हैं, प्रवासी पक्षी कहलाते हैं। भारत आने वाले प्रवासी पक्षियों में साइबेरियन क्रेन, ग्रेटर फ्लेमिंगो, रफ, ब्लैक विंग्ट स्टिल्ट, कॉमन टील, वुड सैंडपाइपर जैसी पक्षियों की प्रजातियां शामिल हैं। इन प्रवासी पक्षियों को हम जिम कॉर्बेट, दिल्ली बायोडायवर्सिटी पार्क जैसी जगहों पर भी देख सकते हैं।

https://www.evidyarthi.in/